Faizane Namaz (Hindi)

फ़ैज़ाने नमाज़





مكتبة المدينة
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़िफ़रत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। **(تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ ص١٣٨ دار الفكر بيروت)**

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

(फ़ैज़ाने नमाज़)

येह रिसाला **(फ़ैज़ाने नमाज़)**

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

फ़ैज़ाने नमाज़ (1)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "दुआ मांग ! क़बूल की जाएगी, सुवाल कर ! दिया जाएगा।"

(سُنن النَّسائی، ج ۱، ص ۲۲۰، حدیث ۱۲۸۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنۡتُ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَالۡيَوۡمِ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत

(1: येह अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ "नमाज़ के अह़काम" से माख़ूज़ है मज़ीद तफ़्सीलात के लिये "नमाज़ के अह़काम" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि. मुत़ाबिक़ दिसम्बर 2011 ई......**इल्मिय्या**)

الْاٰخِرِ وَ الْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَ شَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى
के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है
وَ الْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ
और मौत के बा'द उठाए जाने पर

ईमाने मुज्मल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَ صِفَاتِهٖ وَ قَبِلْتُ
मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने
جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ
उस के तमाम अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़्रार करते हुए और दिल से तस्दीक़ करते हुए

शश कलिमे

अव्वल कलिमा त़य्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ
मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
और मैं गवाही देता हूं कि बेशक मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं

وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
और **अल्लाह** सब से बड़ा है और गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ
अल्लाह ही की तरफ़ से है जो सब से बुलन्द, अ़-ज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौह़ीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ
अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही
وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَحَیٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا
और उसी के लिये ह़म्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं
اَبَدًا ط ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَ
आएगी बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है उस के हाथ में भलाई है और

هُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ
वोह हर चीज़ पर क़ादिर है

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہَ رَبِّیۡ مِنۡ کُلِّ ذَنۡبٍ اَذۡنَبۡتُہٗ عَمَدًا اَوۡ
मैं **अल्लाह** से मुआफ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया
خَطَأً سِرًّا اَوۡ عَلَانِیَۃً وَّ اَتُوۡبُ اِلَیۡہِ مِنَ الذَّنۡبِ
या भुल कर, छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह
الَّذِیۡۤ اَعۡلَمُ وَمِنَ الذَّنۡبِ الَّذِیۡ لَاۤ اَعۡلَمُ اِنَّكَ
से जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता (ऐ **अल्लाह**) बेशक
اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُیُوۡبِ وَ سَتَّارُ الۡعُیُوۡبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوۡبِ
तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ
और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी कर ने की कुव्वत **अल्लाह** ही की तरफ़ से है जो सब से बुलन्द,अ-ज़मत वाला है

छठा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْـًٔا
ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं
وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ
जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस
عَنْهُ وَ تَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ
से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से
وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ
और ग़ीबत से और बिद्अ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोह्तान से

وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इ़बादत
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं ।

वुज़ू का त़रीक़ा

का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है । वुज़ू के लिये निय्यत करना सुन्नत है निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रहा हूं. "**بِسْمِ اللّٰه**" कह लीजिये कि येह

भी सुन्नत है। बल्कि بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे। अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं उपर नीचे के दांतों में मिस्वाक कीजिये और हर बार मिस्वाक धो लीजिये।

अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ तीन कुल्लियां कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर पानी बह जाए अगर रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर रोज़ा न हो तो नाक

की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उल्टे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये। तीन बार सारा चेहरा इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़-दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए।

अगर दाढ़ी है और ऐह़राम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द कर ने के बा'द) इस त़रह़ ख़िलाल कीजिये कि उंग्लियों को गले की त़रफ़ से दाख़िल कर के सामने की त़रफ़ निकालिये। फिर पहले सीधा हाथ उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी त़रह़ फिर उल्टा हाथ धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाज़ू तक

धोना मुस्तहब है। अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि (बिग़ैर इजाज़ते सह़ीह़ा ऐसा करना) येह पानी का इस्राफ़ है। अब (नल बन्द कर के) सर का मस्ह़ इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाइये कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस

दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे की उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़्ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़्ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये, बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये बिला वजह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक्ता रहे गुनाह है। अब पहले सीधा फिर उल्टा पाउं हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के टख़्नों के उपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये)

इस का मुस्तहब त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ की छुंग्लिया से सीधे पाउं की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उल्टे ही हाथ की छुंग्लिया से उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये।

(आ़म्मए कुतुब)

वुज़ू के बा'द येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये! (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ
ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे
وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ
और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे

(جامع ترمذی، ج۱، ص۱۲۱، حدیث ۵۵)

वुज़ू के बा'द कलिमए शहादत और सूरए क़द्र पढ़ लीजिये कि अहादीस में इन के फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं।

लफ़्ज़े "अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के चार फ़राइज़

① चेहरा धोना ② कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना ③ चौथाई सर का मस्ह़ करना ④ टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना। (الفتاوی الهندية، ج١،ص٣)

ग़ुस्ल का त़रीक़ा

बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करता हूं। पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, हां अगर चौकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी

चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में, (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उल्टे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाएं कि किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुम्किन न हो तो मर्द अपना सित्र (नाफ़ से ले कर दोनों गुठनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूं कि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी। औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है।

दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त-गू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये नहाने के बा'द तोलिया वग़ैरा से बदन पूंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना **मुस्तह़ब** है। (आ़म्मए कुतुबे फ़िक़्ह)

ग़ुस्ल के फ़राइज़

① कुल्ली करना ② नाक में पानी चढ़ाना ③ तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना। (الفتاوی الهندية، ج ۱،ص۱۳)

तयम्मुम का त़रीक़ा

"**तयम्मुम**" की निय्यत कीजिये (निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से भी कह लें तो बेहतर है। म-सलन यूं कहिये : बे वुज़ूई या बे ग़ुस्ली या दोनों से पाकी ह़ासिल करने और नमाज़ जाइज़ होने के लिये **तयम्मुम** करता हूं) "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ कर दोनों हाथों की उंग्लियां कुशादा

कर के किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की क़िस्म (म-सलन पथ्थर, चूना, ईंट, दीवार, मिट्टी वग़ैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये और पीछे लाइये)। और अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और उस से सारे मुंह का इस त़रह़ मस्ह़ कीजिये कि कोई ह़िस्सा रह न जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो **तयम्मुम** न होगा।

फिर दूसरी बार इसी त़रह़ हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाखुनों से ले कर कोहनियों समेत मस्ह़ कीजिये, इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ के अंगूठे के इ़लावा चार उंग्लियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंग्लियों के सिरों से कोहनियों तक ले जाइये और फिर वहां से उल्टे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को

मस करते हुए गिट्टे तक लाइये और उल्टे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह़ कीजिये । इसी त़रह़ सीधे हाथ से उल्टे हाथ का मस्ह़ कीजिये ।

(فتاوی تاتار خانیه، ج۱،ص۲۲۷)

और अगर एक दम पूरी हथेली और उंग्लियों से मस्ह़ कर लिया तब भी "**तयम्मुम**" हो गया चाहे कोहनी से उंग्लियों की त़रफ़ लाए या उंग्लियों से कोहनी की त़रफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा । **तयम्मुम** में सर और पाउं का मस्ह़ नहीं है । (आ़म्मए कुतुबे फ़िक़्ह)

तयम्मुम के फ़राइज़

तयम्मुम में तीन फर्ज़ हैं : ① निय्यत ② सारे मुंह पर हाथ फैरना, ③ कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना । (बहारे शरीअ़त जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 353)

अज़ान

اَللّٰهُ اَكْبَرُؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُؕ
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُؕ
मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُؕ
मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِؕ
मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِؕ
मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ ط حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ ط
नमाज़ पढ़ने के लिये आओ ! नमाज़ पढ़ने के लिये आओ !
حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ط حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ط
नजात पाने के लिये आओ ! नजात पाने के लिये आओ !
اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ط
अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं

अज़ान का जवाब देने का त़रीक़ा

मुअज़्ज़िन साहिब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें । "اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَر" दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से)

एक **कलिमा** हैं दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला जवाब दे ले, सक्ते का तर्क मक्रूह है और ऐसी अज़ान का इआ़दा मुस्तह़ब है (الدر المختار و ردالمحتار ج۲ ص٦٦) जवाब देने वाले को चाहिये कि जब **मुअज़्ज़िन साहिब** ''اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَر'' कह कर सक्ता करें या'नी ख़ामोश हों उस वक़्त ''اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहे। इसी त़रह़ दीगर कलिमात का जवाब दे। जब मुअज़्ज़िन पहली बार ''اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ الله'' कहे, येह कहे :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ الله

आप पर दुरूद हो **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)

(رد المحتار، ج۲،ص ۸٤)

जब दोबारा कहे, येह कहे :

"قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ"

या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आप से मेरी आंखों की ठन्डक है

(المرجع السابق)

और हर बार अंगूठों के नाख़ुन आंखों से लगा ले, आख़िर में कहे :

"اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ"

ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मेरी सुनने और देखने की क़ुव्वत से मुझे नफ़अ़ अ़ता फ़रमा

(المرجع السابق)

जो ऐसा करे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उसे अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे।

(المرجع السابق)

''حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ'' और ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ''

के जवाब में (चारों बार) ''لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ'' कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी मुअज़्ज़िन ने जो कहा वोह भी कहे और ''लाहौल'' भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :

''مَاشَآءَ اللّٰہُ کَانَ وَمَا لَمْ یَشَأْ لَمْ یَکُنْ''

जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा

(الدرالمختار وردالمحتار، ج۲،ص۸۲، الفتاوی الھندیۃ، ج۱،ص۵۷)

''اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ'' के जवाब में कहे :

''صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَ بِالْحَقِّ نَطَقْتَ''

तू सच्चा और नेकूकार है और तू ने ह़क़ कहा है

(الدرالمختار وردالمحتار، ج۲،ص۸۳)

अज़ान की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ
ऐ **अल्लाह !** इस दा'वते ताम्मा और सलाते
الْقَآئِمَةِ اٰتِ سَیِّدَنَا مُحَمَّدَ نِالْوَسِیلَةَ
क़ाइमा के मालिक तू हमारे सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को वसीला
وَالْفَضِیْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِیْعَةَ وَابْعَثْهُ
और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द द-रजा अ़त़ा फ़रमा और उन को
مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِالَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا
मक़ामे मह़मूद में खड़ा कर जिस का तूने उन से वा'दा किया है और हमें
شَفَاعَتَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ط اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं
الْمِیْعَادَ ط بِرَحْمَتِكَ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ
करता। हम पर अपनी रह़मत फ़रमा ऐ सब से बढ़ कर रह़म करने वाले

नमाज़ का त़रीक़ा

बा वुज़ू क़िब्ला रू इस त़रह़ खड़े हों कि दोनों पाउं के पन्जों में चार उंगल का फ़ासिला रहे और दोनों हाथ कानों तक ले जाइये कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएं और उंग्लियां न मिली हुई हों न ख़ूब खुली बल्कि अपनी ह़ालत पर (Normal) रखें और हथेलियां क़िब्ले की त़रफ़ हों नज़र सज्दे की जगह हो। अब जो नमाज़ पढ़ना है उस की निय्यत या'नी दिल में उस का पक्का इरादा कीजिये साथ ही ज़बान से भी कह लीजिये कि ज़ियादा अच्छा है (म–सलन निय्यत की मैं ने आज की ज़ोहर की चार रक्अ़त फ़र्ज़ नमाज़ की, अगर बा जमाअ़त पढ़ रहे हैं तो येह भी कह लें पीछे इस इमाम के) अब तक्बीरे तह़रीमा या'नी "**अल्लाहु अक्बर**" कहते हुए हाथ नीचे लाइये और नाफ़ के नीचे इस त़रह़ बांधिये कि सीधी हथेली की गुद्दी उल्टी हथेली के सिरे पर

और बीच की तीन उंग्लियां उल्टी कलाई की पीठ पर और अंगूठा और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) कलाई के अग़ल बग़ल हों।

अब इस त़रह़ सना पढ़िये :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ
पाक है तू ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम ब-र-कत वाला है
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط
और तेरी अ़-ज़मत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।

फिर तअ़व्वुज़ पढ़िये :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم

मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह में आता हूं शैत़ान मरदूद से

फ़िर तस्मिया पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

फिर मुकम्मल सूरए फ़ातिहा पढ़िये :

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿﴾ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪﴿﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का । बहुत मेहरबान रह़मत वाला, रोज़े जज़ा का मालिक। हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें । हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उन का जिन पर तूने एह़सान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का ।

सूरए फ़ातिह़ा ख़त्म कर के आहिस्ता से "**आमीन**" कहिये । फिर तीन आयात या एक बड़ी आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो या कोई सूरत म-सलन सूरए इख़्लास पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है । **अल्लाह** बे नियाज़ है । न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई ।

अब "**अल्लाहु अक्बर**" कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और घुटनों को इस त़रह़ हाथ से पकड़िये कि हथेलियां घुटनों पर और उंग्लियां अच्छी त़रह़ फैली हुई हों । पीठ बिछी हुई और सर पीठ की सीध में हो ऊंचा नीचा न हो और नज़र क़दमों पर हो। कम अज़ कम तीन बार रुकूअ़ की तस्बीह़ या'नी "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِيْم" (या'नी पाक है

मेरा अ़-ज़मत वाला परवर दगार) कहिये । फिर **तस्मीअ़** या'नी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَہ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की) कहते हुए बिल्कुल सीधे खड़े हो जाइये, इस खड़े होने को "**क़ौमा**" कहते हैं । अगर आप **मुन्फ़रिद** हैं या'नी अकेले नमाज़ पढ़ रहे हैं तो इस के बा'द कहिये :

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ

ऐ **अल्लाह !** ऐ हमारे मालिक ! सब ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं

फिर "**अल्लाहु अक्बर**" कहते हुए इस त़रह़ सज्दे में जाइये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखिये फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में इस त़रह़ सर रखिये कि पहले नाक फिर पेशानी और येह ख़ास ख़याल रखिये कि नाक की नोक नहीं बल्कि हड्डी लगे और पेशानी ज़मीन

पर जम जाए, नज़र नाक पर रहे, बाज़ूओं को करवटों से, पेट को रानों से और रानों को पिंडलियों से जुदा रखिये। (हां अगर सफ़ में हों तो बाज़ू करवटों से लगाए रखिये) और दोनों पाउं की दसों उंग्लियों का रुख़ इस त़रह़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे कि दसों उंग्लियों के पेट (या'नी उंग्लियों के तल्वों के उभरे हुए ह़िस्से) ज़मीन पर लगे रहें। हथेलियां बिछी रहें और उंग्लियां "क़िब्ला रू" रहें मगर कलाइयां ज़मीन से लगी हुई मत रखिये। और अब कम अज़ कम तीन बार सज्दे की तस्बीह़ या'नी "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی" (पाक है मेरा परवर्द गार सब से बुलन्द) पढ़िये। फिर सर इस त़रह़ उठाइये कि पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ उठें। फिर सीधा क़दम खड़ा कर के उस की उंग्लियां क़िब्ला रुख़ कर दीजिये और उल्टा क़दम बिछा कर

उस पर ख़ूब सीधे बैठ जाइये और हथेलियां बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखिये कि दोनों हाथों की उंग्लियां क़िब्ले की जानिब और उंग्लियों के सिरे घुटनों के पास हों। दोनों सज्दों के दरमियान बैठने को जल्सा कहते हैं। फिर कम अज़् कम एक बार سُبۡحٰنَ اللہ कहने की मिक़्दार ठहरिये (इस वक़्फ़े में اَللّٰھُمَّ اغۡفِرۡلِیۡ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा कह लेना मुस्तहब है) फिर "**अल्लाहु अक्बर**" कहते हुए पहले सज्दे ही की त़रह़ दूसरा सज्दा कीजिये। अब इसी त़रह़ पहले सर उठाइये फिर हाथों को घुटनों पर रख कर पन्जों के बल खड़े हो जाइये। उठते वक़्त बिग़ैर मजबूरी ज़मीन पर हाथ से टेक मत लगाइये। येह आप की एक रक्अ़त पूरी हुई। अब दूसरी रक्अ़त में

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर **अल ह़म्द** और सूरत पढ़िये और पहले की त़रह़ रुकूअ़ और सज्दे कीजिये, दूसरे सज्दे से सर उठाने के बा'द सीधा क़दम खड़ा कर के उल्टा क़दम बिछा कर बैठ जाइये दो2 रक्अ़त के दूसरे सज्दे के बा'द बैठना क़ा'दह कहलाता है अब क़ा'दह में तशह्हुद पढ़िये :

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَ الصَّلَوَاتُ وَ الطَّیِّبٰتُ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ
तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इ़बादतें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर
اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی
ऐ नबी ! और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें। सलाम हो हम पर और **अल्लाह** के
عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ ط اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ
नेक बन्दों पर, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं

وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ

और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं

जब **तशह्हुद** में लफ़्ज़े "لَا" के क़रीब पहुंचें तो सीधे हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का ह़ल्क़ा बना लीजिये और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली)और बिन्सर या'नी उस के बराबर वाली उंगली को हथेली से मिला दीजिये और (اَشْهَدُ اَنْ के फ़ौरन बा'द) लफ़्ज़े "لَا" कहते ही कलिमे की उंगली उठाइये मगर इस को इधर उधर मत हिलाइये और लफ़्ज़ ''اِلَّا'' पर गिरा दीजिये और फ़ौरन सब उंग्लियां सीधी कर लीजिये । अब अगर दो से ज़ियादा रक्अ़तें पढ़नी हैं तो ''**अल्लाहु अक्बर**'' कहते हुए खड़े हो जाइये । अगर फ़र्ज नमाज़ पढ़ रहे हैं तो तीसरी और चौथी रक्अ़त के क़ियाम में''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ''और ''**अल ह़म्द**'' शरीफ़ पढ़िये ! सूरत मिलाने की ज़रूरत

नहीं । बाक़ी अफ़आ़ल इसी त़रह़ बजा लाइये और अगर सुन्नत व नफ़्ल हों तो "**सूरए फ़ातिह़ा**" के बा'द सूरत भी मिलाइये (हां अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे हैं तो किसी भी रक्अ़त के क़ियाम में क़िराअत न कीजिये ख़ामोश खड़े रहिये) फिर चार रक्अ़तें पूरी कर के क़ा'दए अख़ीरा में **तशह्हुद** के बा'द दुरूदे इब्राहीम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुह़म्मद पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने
صَلَّيۡتَ عَلٰٓى اِبۡرٰهِيۡمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبۡرٰهِيۡمَ اِنَّكَ
दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर, बेशक तू
حَمِيۡدٌ مَّجِيۡدٌ ط اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ
सराहा हुवा बुज़ुर्ग है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ब-र-कत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुह़म्मद पर और

عَلٰۤی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰۤی اِبْرٰھِیْمَ
उन की आल पर जिस त़रह़ तूने ब-र-कत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम
وَعَلٰۤی اٰلِ اِبْرٰھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ط
और उन की आल पर, बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

फिर कोई सी दुआ़ए मासूरा पढ़िये, म-सलन येह दुआ़ पढ़ लीजिये :

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً
ऐ **अल्लाह**! ऐ रब हमारे! हमें दुन्या में भलाई दे
وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ
और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिये पहले दाएं कन्धे की त़रफ़ मुंह कर के ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ'' कहिये और इसी त़रह़ बाएं त़रफ़। अब नमाज़ ख़त्म हुई।

(مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی، ص۲۷۸، غنية المتملی،ص۲۹۸)

''या अल्लाह'' के छ हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ की 6 शराइत़

① त़हारत ② सित्रे औ़रत ③ इस्तिक़्बाले क़िब्ला ④ वक़्त ⑤ निय्यत ⑥ तक्बीरे तह़रीमा ।

"بِسْمِ اللّٰہِ" के सात हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 7 फ़राइज़

① तक्बीरे तह़रीमा ② क़ियाम ③ क़िराअत ④ रुकूअ़ ⑤ सुजूद ⑥ क़ा'दए अख़ीरा ⑦ ख़ुरूजे बिसुन्इही । (غنیۃ المتملی،ص۲۵٦)

''क़ियामत में सब से पहले नमाज़ का सुवाल होगा'' के तीस हुरूफ़ की निस्बत से तक़रीबन 30 वाजिबात

① तक्बीरे तह़रीमा में लफ़्ज़ ''**अल्लाहु अक्बर**'' कहना ② फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त के इ़लावा बाक़ी तमाम नमाज़ों की हर रक्अ़त में **अल ह़म्द** शरीफ़ पढ़ना, सूरत मिलाना या क़ुरआने पाक की एक बड़ी आयत जो छोटी तीन आयतों के बराबर हो या तीन छोटी आयतें पढ़ना ③ **अल ह़म्द** शरीफ़ का सूरत से पहले पढ़ना ④ **अल ह़म्द** शरीफ़ और सूरत के दरमियान ''**आमीन**'' और ''بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم'' के इ़लावा

कुछ और न पढ़ना ⑤ क़िराअत के फ़ौरन बा'द रुकूअ़ करना ⑥ एक सज्दे के बा'द बित्तरतीब दूसरा सज्दा करना ⑦ ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰہ कहने की मिक्दार ठहरना ⑧ क़ौमा या'नी रुकूअ़ से सीधा खड़ा होना (बा'ज़ लोग कमर सीधी नहीं करते इस त़रह़ उन का वाजिब छूट जाता है) ⑨ जल्सा या'नी दो सज्दों के दरमियान सीधा बैठना (बा'ज़ लोग जल्द बाज़ी की वजह से बराबर सीधे बैठने से पहले ही दूसरे सज्दे में चले जाते हैं इस त़रह़ उन का वाजिब तर्क हो जाता है चाहे कितनी ही जल्दी हो सीधा बैठना लाज़िमी है वरना नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी **वाजिबुल इआ़दा** होगी) ⑩ क़ा'दए ऊला वाजिब है अगर्चे नमाजे़ नफ़्ल हो....(दर अस्ल नफ़्ल का हर क़ा'दह, ''क़ा'दए अख़ीरा'' है और फ़र्ज़ है अगर क़ा'दह न किया और भूल कर खड़ा हो गया तो जब तक इस रक्अ़त का सज्दा न कर ले लौट आए और सज्दए सह्व करे ।)

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 712)

अगर नफ़्ल की तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर के सज्दए सह्व करे, सज्दए सह्व इस लिये वाजिब हुवा कि अगर्चे नफ़्ल में हर दो रक्अ़त के बा'द क़ा'दह फ़र्ज़ है मगर तीसरी या पांचवीं (علیٰ ھذا القیاس) रक्अ़त का सज्दा करने के बा'द क़ा'दए ऊला फ़र्ज़ के बजाए वाजिब हो गया (طحطاوی، ص٤٦٦ ملخصاً) ⑪ फ़र्ज़, वित्र और **सुन्नते मुअक्कदा** में **तशह्हुद** (या'नी **अत्तहिय्यात**) के बा'द कुछ न बढ़ाना ⑫ दोनों क़ा'दों में "**तशह्हुद**" मुकम्मल पढ़ना। अगर एक लफ़्ज़ भी छूटा तो वाजिब तर्क हो जाएगा और **सज्दए सह्व** वाजिब होगा ⑬ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते **मुअक्कदा** के क़ा'दए ऊला में **तशह्हुद** के बा'द अगर बे ख़याली में

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

या

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا

कह लिया तो **सज्दए सह्व** वाजिब हो गया और अगर जान बूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है (الدرالمختار و ردالمحتار، ج۲، ص۲۶۹) ⑭ दोनों त़रफ़ सलाम फैरते वक़्त लफ़्ज़ "اَلسَّلام" दोनों बार वाजिब है । लफ़्ज़ "عَلَيْكُم" वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है ⑮ वित्र में तक्बीरे क़ुनूत कहना ⑯ वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना ⑰ ईदैन की छ तक्बीरें ⑱ ईदैन में दूसरी रक्अ़त की तक्बीरे रुकूअ़ और इस तक्बीर के लिये लफ़्ज़े "**अल्लाहु अक्बर**" होना ⑲ जह्री नमाज़ म-सलन मग़रिब व इशा की पहली और दूसरी रक्अ़त और फ़ज्र, जुमुआ़, ईदैन, तरावीह़ और र-मज़ान शरीफ़ के वित्र की हर रक्अ़त में इमाम को जह्र (या'नी इतनी बुलन्द आवाज़ कि कम अज़ कम तीन आदमी सुन सकें) से क़िराअत करना ⑳ ग़ैरे जह्री नमाज़ (म-सलन ज़ोहर व अ़स्र) में आहिस्ता

क़िराअत करना ㉑ हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह होना ㉒ रुकूअ़ हर रक्अ़त में एक ही बार करना ㉓ सज्दा हर रक्अ़त में दो ही बार करना ㉔ दूसरी रक्अ़त से पहले क़ा'दह न करना ㉕ चार रक्अ़त वाली नमाज़ में तीसरी रक्अ़त पर क़ा'दह न करना ㉖ आयते सज्दा पढ़ी हो तो सज्दए तिलावत करना ㉗ सज्दए सह्व वाजिब हुवा हो तो सज्दए सह्व करना ㉘ दो फ़र्ज़ या दो वाजिब या फ़र्ज़ व वाजिब के दरमियान तीन तस्बीह़ की क़दर (या'नी तीन बार ''سُبْحٰنَ اللّٰہ'' कहने की मिक़्दार) वक़्फ़ा न होना ㉙ इमाम जब क़िराअत करे ख़्वाह बुलन्द आवाज़ से हो या आहिस्ता आवाज़ से मुक़्तदी का चुप रहना ㉚ क़िराअत के सिवा तमाम वाजिबात में इमाम की पैरवी करना ।

(الدرالمختارو ردالمحتار، ج۲،ص۱۸۱،الفتاوی الهندیة، ج۱،ص۷۱)

दुआए कुनूत

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ

ऐ **अल्लाह** ! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं

بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِیْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ

और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और

وَ نَشْكُرُكَ وَ لَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ

तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते और अलग करते और छोड़ते हैं उस

مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰھُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ لَكَ نُصَلِّیْ

शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे। ऐ **अल्लाह** ! हम तेरी ही इबादत करते और तेरे ही लिये नमाज़

وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰی وَ نَحْفِدُ وَ نَرْجُوْا رَحْمَتَكَ

पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते और ख़िदमत के लिये हाज़िर होते हैं और तेरी

وَنَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ط

रहमत के उम्मीद वार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है

दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

(غنية المتملی، ص٤١٧)

जो दुआ़ए कुनूत न पढ़ सकें वोह येह पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً
ऐ **अल्लाह** ! ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे
وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ
और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

या येह पढ़ें :

''اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِى'' (ऐ **अल्लाह** ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे)

(مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی، ص٣٨٥)

दुआ़ए तरावीह़

سُبْحٰنَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ ٥ سُبْحٰنَ ذِى
पाक है मुल्क व म-लकूत वाला, पाक है

الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ
इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी और जलाल व कुदरत और बड़ाई
وَالْجَبَرُوْتِ ۝ سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ
और ज–बरूत वाला, पाक है बादशाह जो ज़िन्दा है, जो न सोता है,
وَلَا يَمُوْتُ ۝ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ
न मरता है पाक मुक़द्दस है हमारा रब और रब
الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ ۝ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ ۝
फ़िरिश्तों और रूह़ का, ऐ **अल्लाह !** मुझे (जहन्नम की) आग से नजात अ़ता फ़रमा,
يَامُجِيْرُ يَامُجِيْرُ يَامُجِيْرُ ۝
ऐ नजात देने वाले ! ऐ नजात देने वाले ! ऐ नजात देने वाले !
بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝
अपनी रह़मत के सबब हम पर रह़्म फ़रमा ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा

मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करे "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासिते़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के।" (فتاوی تاتارخانیه، ج۲، ص۱۵۳) अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और "**अल्लाहु अक्बर**" कहते हुए फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें और सना पढ़ें। इस में "وَتَعَالٰی جَدُّكَ" के बा'द "وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ" पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "**अल्लाहु अक्बर**" कहें, फिर दुरूदे इब्राहीम पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "**अल्लाहु अक्बर**" कहें और दुआ़ पढ़ें (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता। बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें) दुआ़ के बा'द फिर

"**अल्लाहु अक्बर**" कहें और हाथ लटका दें फिर दोनों त़रफ़ सलाम फैर दें ।

(حاشية الطحطاوى، ص٥٨٤)

नमाज़े जनाज़ा के अरकान

नमाज़े जनाज़ा के दो रुकन हैं : ① चार बार "**अल्लाहु अक्बर**" कहना ② क़ियाम । (الدُّرُّالمُختار و ردالمحتار،ج٣،ص١٢٤)

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَ مَيِّتِنَا
इलाही बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को
وَ شَاهِدِنَا وَ غَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا
और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को
وَ كَبِيْرِنَا وَ ذَكَرِنَا وَ اُنْثَانَا ط
और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को

اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَہٗ مِنَّا فَاَحْیِہٖ عَلَی الْاِسْلَامِ
इलाही तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख
وَ مَنْ تَوَفَّیْتَہٗ مِنَّا فَتَوَفَّہٗ عَلَی الْاِیْمَان
और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे।

ना बालिग़ लड़के की दुआ

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ لَنَا فَرَطًا
इलाही इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे
وَّاجْعَلْہُ لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا
और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे
وَّاجْعَلْہُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط
और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए

ना बालिग़ लड़की की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا
इलाही इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे
وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًاوَّذُخْرًا
और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे
وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط
और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए

(مشكوٰة المصابيح، ج ١، ص ٣١٩، حديث ١٦٧٥، الفتاوى الهندية، ج ١ ص ١٦٤)

शिक्वा की ता'रीफ़

मुसीबत के वक़्त वावेला करने और सब्र का दामन हाथ से छोड़ देने को शिक्वा कहते हैं।

(حديقه نديه شرح طريقه محمديه ج ٢ ص ٩٨)

फ़ेहरिस

ماٰخذ ومراجع

مطبوعه	مصنف	نام کتاب
دار الفکر ۱۴۱۴ھ	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسی الترمذی ۲۷۹ھ	سنن الترمذی
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۶ھ	امام احمد بن شعیب النسائی ۳۰۳ھ	سنن النسائی
دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ	امام محمد بن عبد اللّٰہ التبریزی ۷۴۲ھ	مشکوۃ المصابیح
باب المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ	علامہ عالم بن علاء انصاری دہلوی ۷۸۶ھ	الفتاوی التاتارخانیہ
دار المعرفۃ ۱۴۲۰ھ	امام علاء الدین محمد بن علی الحصکفی ۱۰۸۸ھ	الدر المختار
دار المعرفۃ ۱۴۲۰ھ	امام محمد امین ابن عابدین الشامی ۱۲۵۲ھ	ردالمحتار
لاہور	علامہ محمد ابراہیم بن الحلبی ۹۵۶ھ	غنیۃ المتملی
باب المدینہ کراچی	علامہ حسن بن عمار الشرنبلالی ۱۰۶۹ھ	مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی
باب المدینہ کراچی	امام السید احمد بن محمد الطحطاوی ۱۲۴۱ھ	حاشیۃ الطحطاوی
کوئٹہ ۱۴۰۳ھ	علامہ نظام الدین الحنفی ۱۱۶۱ھ، وغیرہ	الفتاوی الهندیة
مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ	مفتی امجد علی قادری ۱۳۶۷ھ	بہار شریعت

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ।

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

कानपूर : मुहिब नवाब मस्जिद के सामने, ... रोड, ... पुरा, कानपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 ... मस्जिद, ... बाज़ार, ... रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पूरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुबली : A.J. मुधोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुबली ब्रीज के पास, हुबली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

[illegible] हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 88200 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net